शेप

सबसे वफ़ादार कुत्ता

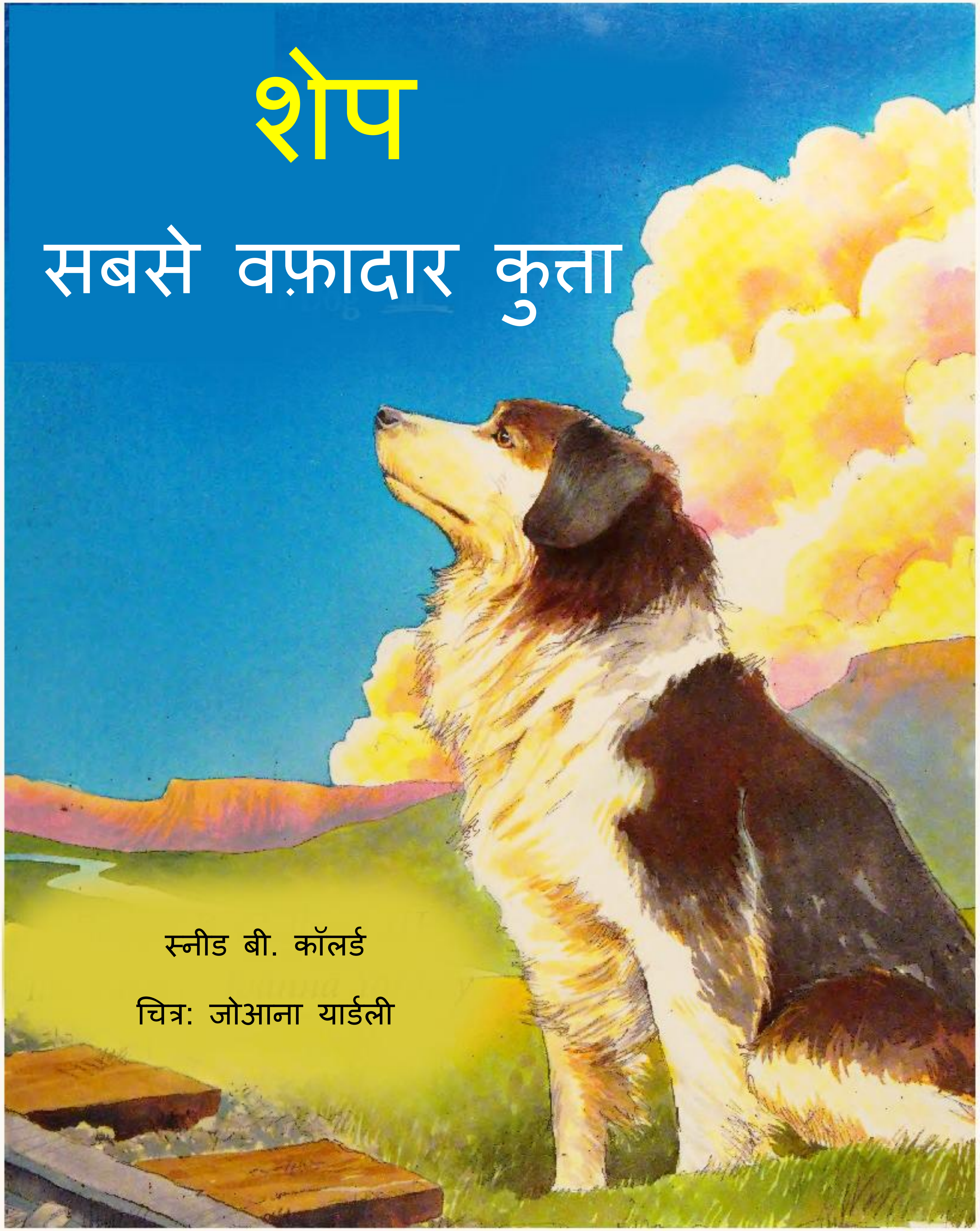

स्नीड बी. कॉलर्ड

चित्र: जोआना यार्डली

शेप

सबसे वफ़ादार कुत्ता

शेप एक ऐसे कुत्ते की सच्ची कहानी है जिसकी अपने मालिक के प्रति वफ़ादारी दुनिया भर के लोगों के लिए प्रेरणा बनी. 1936 में, शेप के मालिक का निधन हो गया और शेप ने देखा कि कैसे उसके शव को एक ट्रेन में रखकर पूर्व की ओर भेजा दिया गया था. उस दिन से, बर्फ़ और बारिश के बीच, शेप हर आने वाली ट्रेन से इस उम्मीद में मिलता रहा कि वह आने वाले यात्रियों में उसका अपना मालिक ज़रूर होगा. शेप ने पाँच साल से भी ज़्यादा समय तक निष्ठापूर्वक देखा और अपने मालिक का इंतज़ार किया. आज भी, लोग फोर्ट बेंटन, मोंटाना में उस निष्ठावान कुत्ते की कब्र पर नमन करने के लिए जाते हैं जिसका व्यव्हार हमें वफ़ादारी और सच्चे दिल का एहसास दिलाता है.

शेप

सबसे वफ़ादार कुत्ता

स्नीड बी. कॉलर्ड

चित्र: जोआना यार्डली

एक भाप वाले इंजन की तीखी सीटी हवा में गूंज़ी.
एक यात्री ट्रेन स्टेशन की ओर धड़धड़ा रही थी.

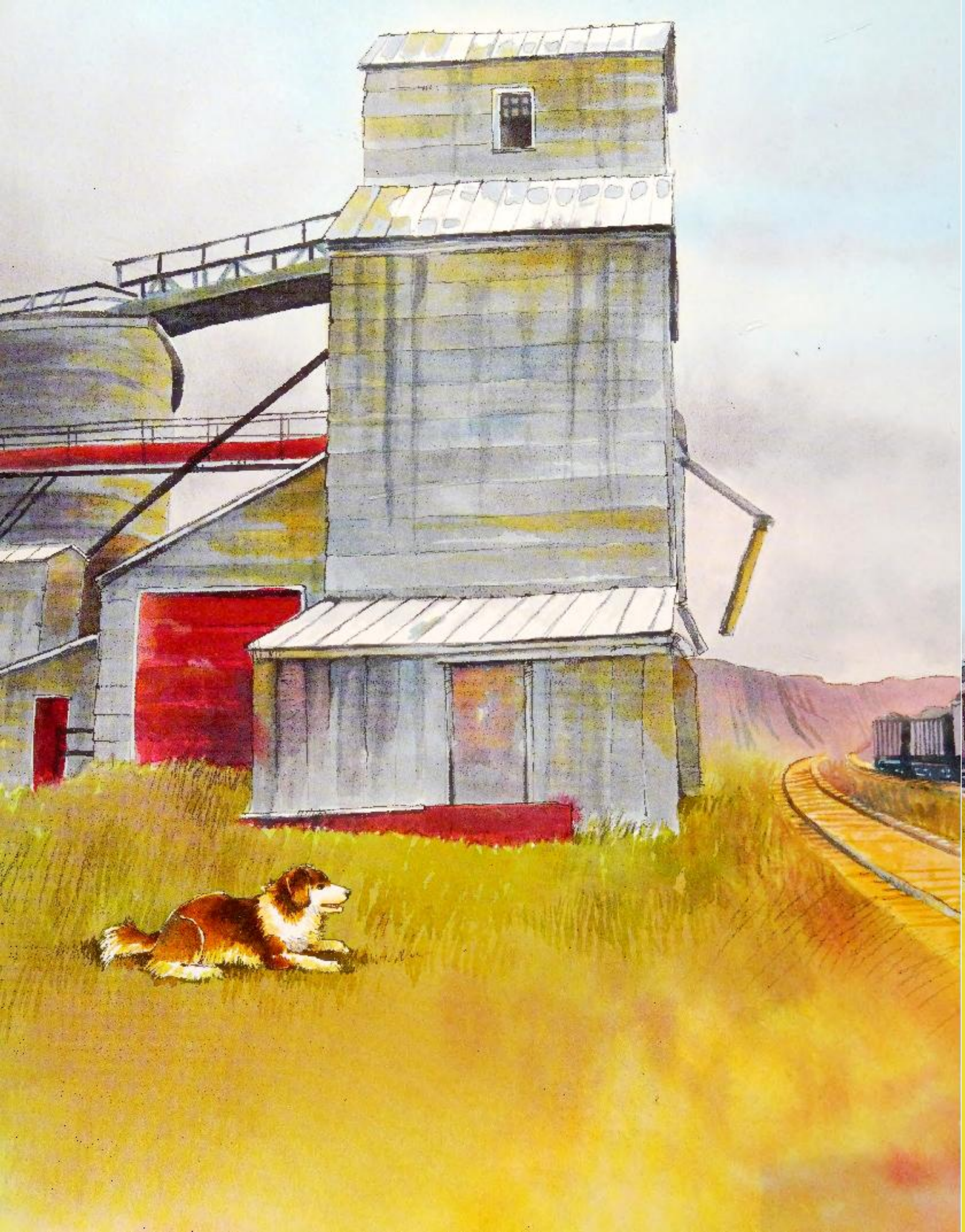

जब कुछ लोग एक शववाहन के पीछे से एक लंबा, खुरदुरा लकड़ी का बक्सा निकालकर उसे प्लेटफार्म पर लुढ़का रहे थे. एक कुत्ता उसे देख रहा था. जैसे ही लोगों ने लकड़ी के बक्से को ट्रेन के सामान वाले डिब्बे में डाला, कुत्ता कराहने लगा.

कम ही लोगों का कुत्ते पर ध्यान गया.

सामान वाले डिब्बे के दरवाज़े ज़ोर से बंद हुए और इंजन की सीटी की आवाज़ गूंजी. फिर, भाप की तेज़ फुफकार और हज़ारों घोड़ों की हाँफती हुई आवाज़ के साथ, ट्रेन धीरे-धीरे पूर्व की ओर दोपहर के सूरज में आगे बढ़ी.

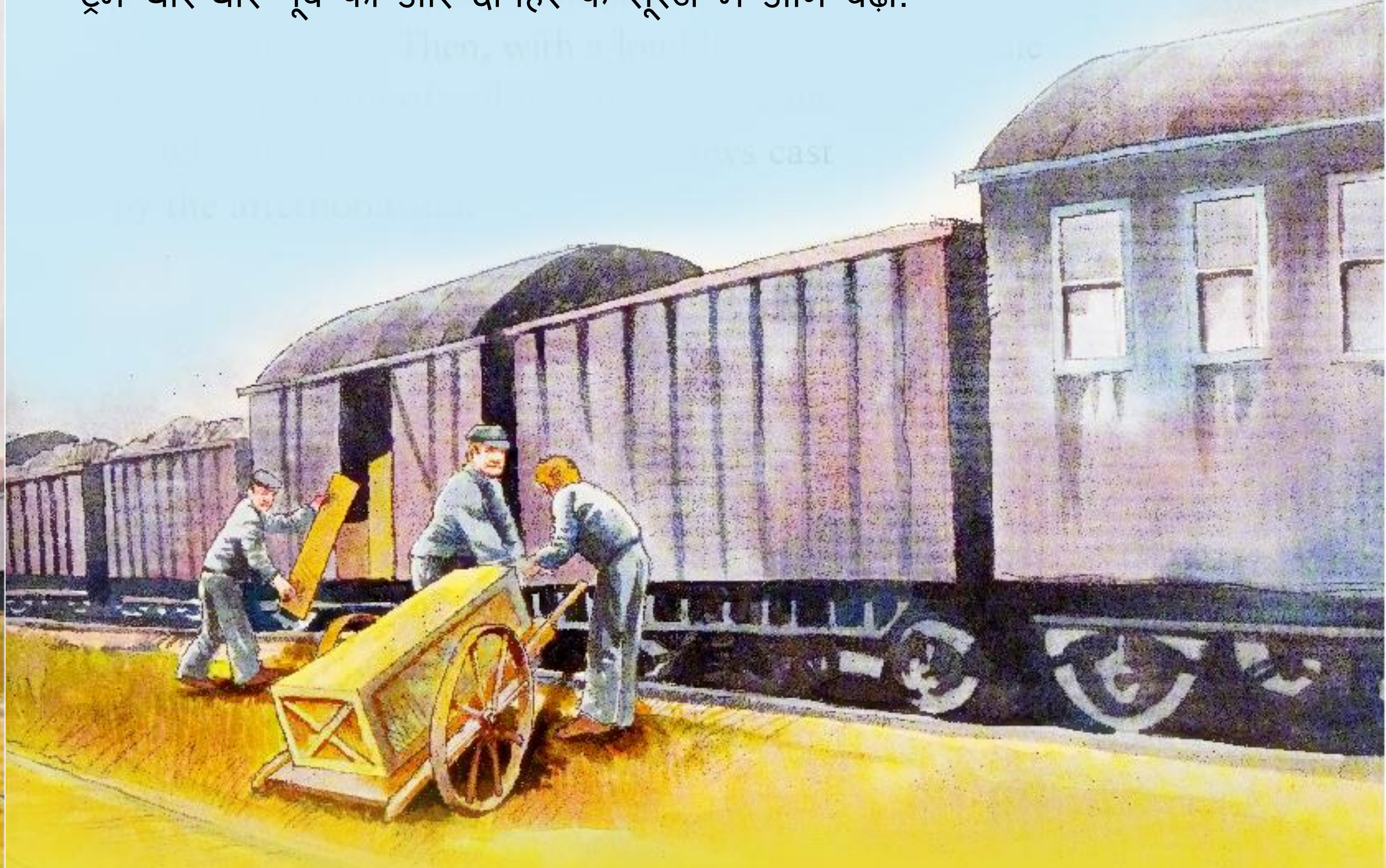

उदास और भ्रमित, कुत्ता उसे जाते हुए देखता रहा. यह उन हज़ारों ट्रेनों में से पहली थी जिन्हें कुत्ता अगले साढ़े पाँच सालों में स्टेशन से निकलते हुए देखेगा. यह कुत्तों और इंसानों के इतिहास के सबसे महान अध्यायों में से एक की शुरुआत थी—उस कुत्ते की कहानी जिसे अब सब "शेप" के नाम से जानते हैं.

शेप का जन्म उत्तर मध्य मोंटाना के विशाल मवेशी और भेड़-बकरियों वाले इलाके में, संभवतः 1920 के दशक के अंत में हुआ था. हर बसंत में, उसका मालिक भेड़ों को एक गाड़ी में भरता और फिर वह और कुत्ता अपने विशाल भेड़ों के झुंड के साथ चरने वाले इलाके में निकल पड़ते. मोंटाना के लंबे दिनों में, शेप खुशी से आगे-पीछे दौड़ता, भेड़ों पर भौंकता ताकि वो भेड़ों को ताज़ी घास की ओर ले जा सके. वह सांपों और भेड़ियों पर कड़ी नज़र रखता और भटकने वाले किसी भी भेड़ को तुरंत पकड़ लेता.

रात में, जब भेड़ें बैठतीं, तब शेप अलाव के पास अपने मालिक के पैरों के पास दुबक कर बैठ जाता. फिर उसका मालिक शेप का फर सहलाता और एक मधुर धुन गुनगुनाता. फिर शेप ने एक गहरी, संतुष्ट आह भरता. जल्द ही, उसके पंजे फड़कने लगते क्योंकि शेप भेड़ों को चराने के एक और शानदार दिन के बारे में सपने देखने लगता.

हज़ारों दिन और रातों के दौरान, आदमी और कुत्ते के बीच का रिश्ता गहरा होता गया. फिर एक गर्मियों वाले दिन, जब शेप शायद छह या सात साल का था, तब उसका मालिक बीमार पड़ गया. शेप ने अपने मालिक को पहले भी बीमार होते देखा था. कभी-कभी, मालिक खाँसता था या सामान्य से ज़्यादा सोता था. लेकिन जल्द ही वह उठकर चलने-फिरने लगता था और अपनी सामान्य अवस्था में वापस आ जाता था.

लेकिन इस बार नहीं.

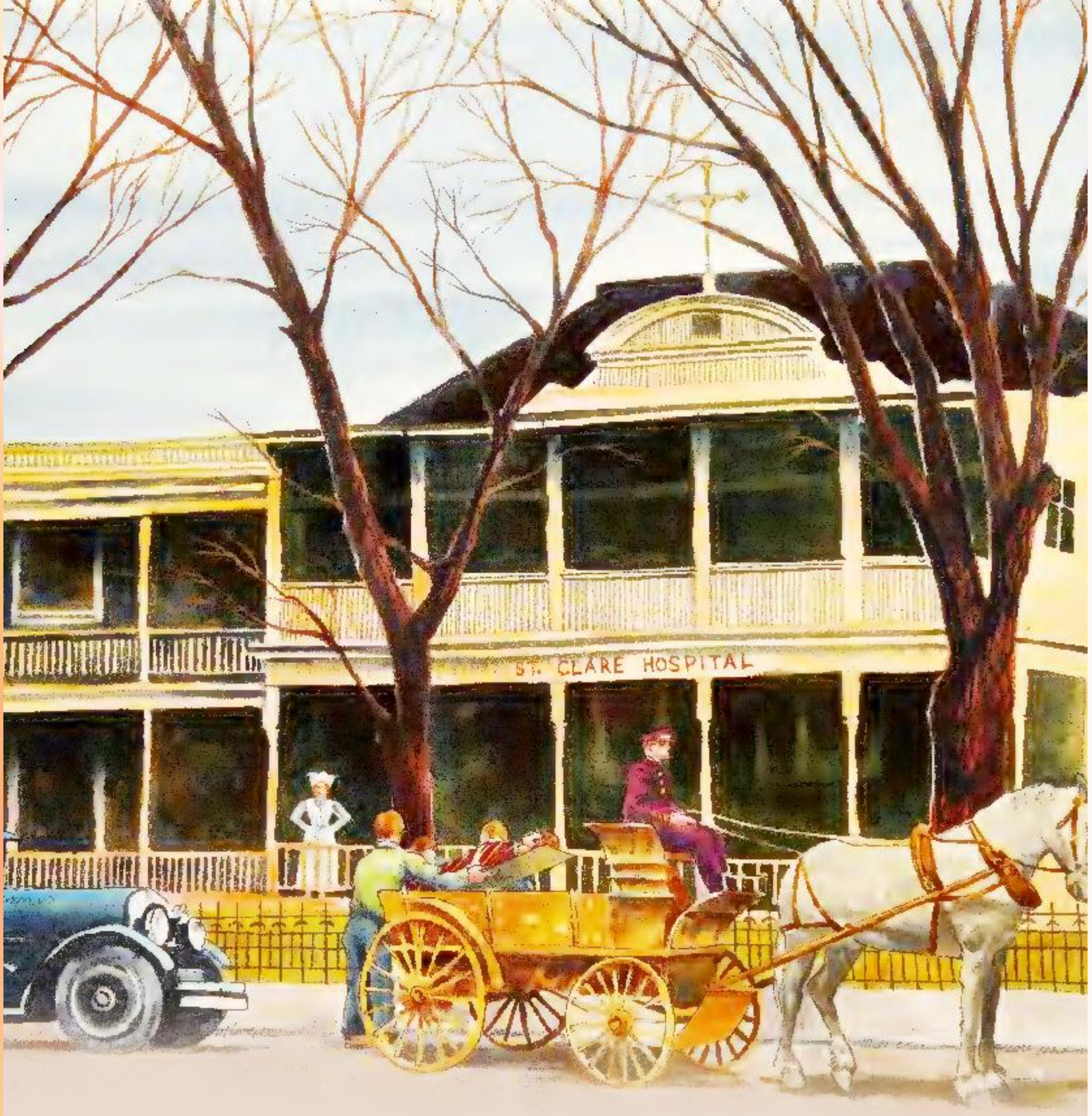

जैसे-जैसे दिन बीतते गए, उसके मालिक की हालत और बिगड़ती गई. एक दिन, एक एम्बुलेंस भेड़ों की गाड़ी के पास आई. दो अजनबियों ने उसके मालिक को एम्बुलेंस में बिठाया और उसे ले गए. शेप उसके पीछे-पीछे चला.

एम्बुलेंस ऊबड़-खाबड़ देहाती रास्तों से होते हुए मिसौरी नदी के किनारे स्थित फोर्ट बेंटन शहर पहुँची. कारों के इंजनों की गर्जना और लोगों की चीख-पुकार से शेप डर गया. वह और भी ज़्यादा तब घबराया जब एम्बुलेंस रुकी और लोग उसके मालिक को एक बड़ी लकड़ी की इमारत में ले गए. शेप ने पीछा करने की कोशिश की, लेकिन अजीबोगरीब, वर्दी पहने महिलाओं ने उसे अंदर जाने से रोक दिया.

अगले कई दिनों तक शेप अस्पताल के बाहर बेचैनी से इंतज़ार करता रहा. वह इंतज़ार करने वाला अकेला नहीं था. ये महामंदी के साल थे. पूरे देश में, लाखों लोग बेरोज़गार और बेघर थे. बदकिस्मत, आवारा और गरीब लोग अक्सर फोर्ट बेंटन से गुज़रते थे. वे अस्पताल के पीछे सिस्टर जेनेवीव नाम की एक लंबी कद-काठी वाली महिला के बाहर आकर उन्हें गरमागरम खाना परोसने का इंतज़ार करते थे. पास में एक बेचैन चरवाहे कुते को देखकर, सिस्टर जेनेवीव ने शेप को भी भोजन और पानी देना शुरू कर दिया.

शेप को उम्मीद थी कि उसका मालिक किसी भी समय अस्पताल से बाहर आ जाएगा, लेकिन वह कभी नहीं बाहर आया. बीमारी ने उसके मालिक की जान ले ली. एक-दो दिन बाद, एक शव-वाहन शेप के मालिक को, ग्रेट नॉर्दर्न रेलवे डिपो ले गया ताकि उसकी लाश को उसके रिश्तेदारों के पास भेजा जा सके.

जब उसने ट्रेन को मोड़ पर गायब होते देखा, तो शेप को इस बात का एहसास नहीं हुआ कि वह अपने मालिक को आखिरी अलविदा कह रहा था.

और इस तरह शुरू हुआ शेप के लिए इंतज़ार का लंबा सिलसिला.

उस दिन के बाद से, शेप फोर्ट बेंटन डिपो पर आने वाली हर यात्री ट्रेन से मिलता. जैसे-जैसे दुनिया भर से यात्री उतरते, शेप हर चेहरे का अध्ययन करता और अपने मालिक की तलाश में हर गंध को सूंघता. कभी-कभी, जब कोई दयालु पुरुष या महिला शेप को सहलाने की कोशिश करता, तो शेप पीछे हट जाता. जब ट्रेन फिर से धीमी गति से चलती और दूर चली जाती, तो चरवाहा कुत्ता शेप भी गायब हो जाता.

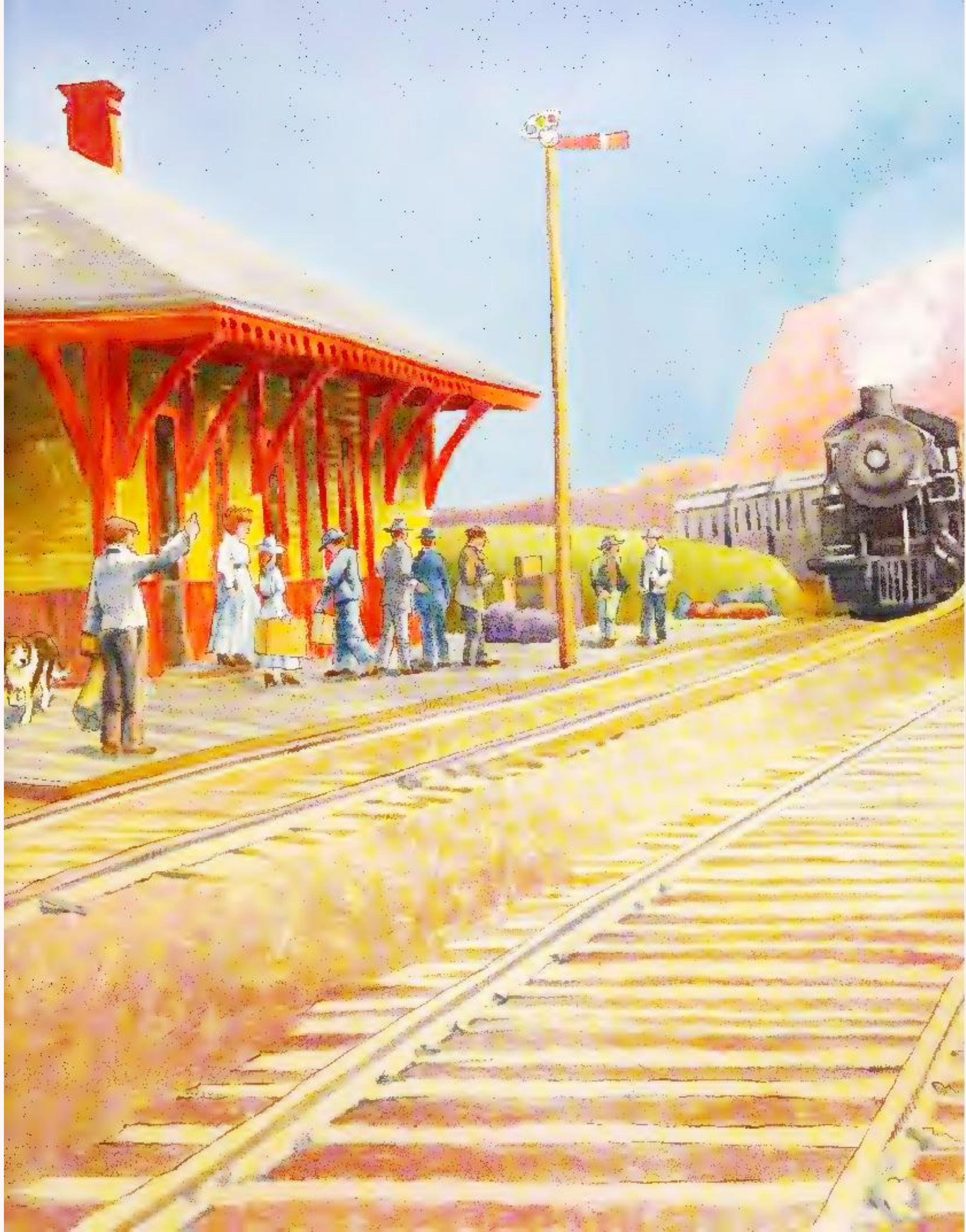

शेप ने स्टेशन के प्लेटफार्म के नीचे एक कोना ढूंढा और उसे अपना होटल बना लिया. जब उसे प्यास लगती, तो वह पानी पीने के लिए मिसौरी नदी तक एक मील से भी ज़्यादा दूर तक दौड़ता. वो शहर के कूड़ेदानों से कुछ खाना ढूँढ़ निकालाता, लेकिन उसे दुबला-पतला होने में ज़्यादा समय नहीं लगा. पर उसकी कमज़ोरी उसे यात्री ट्रेनों से मिलने से नहीं रोक सकी. दिन में चार बार, वह डिपो पर, अपने मालिक के घर आने का इंतज़ार करता दिखाई देता था.

कुछ दिनों, या शायद हफ़्तों बाद, रेलकर्मियों ने स्टेशन के आसपास मंडराते उस अकेले कुत्ते को देखा. डिपो एजेंट टोनी शैंचे ने शेप को सहलाने और स्टेशन की इमारतों में ले जाने की कोशिश की, लेकिन शेप ने उससे अपनी दूरी बनाए रखी.

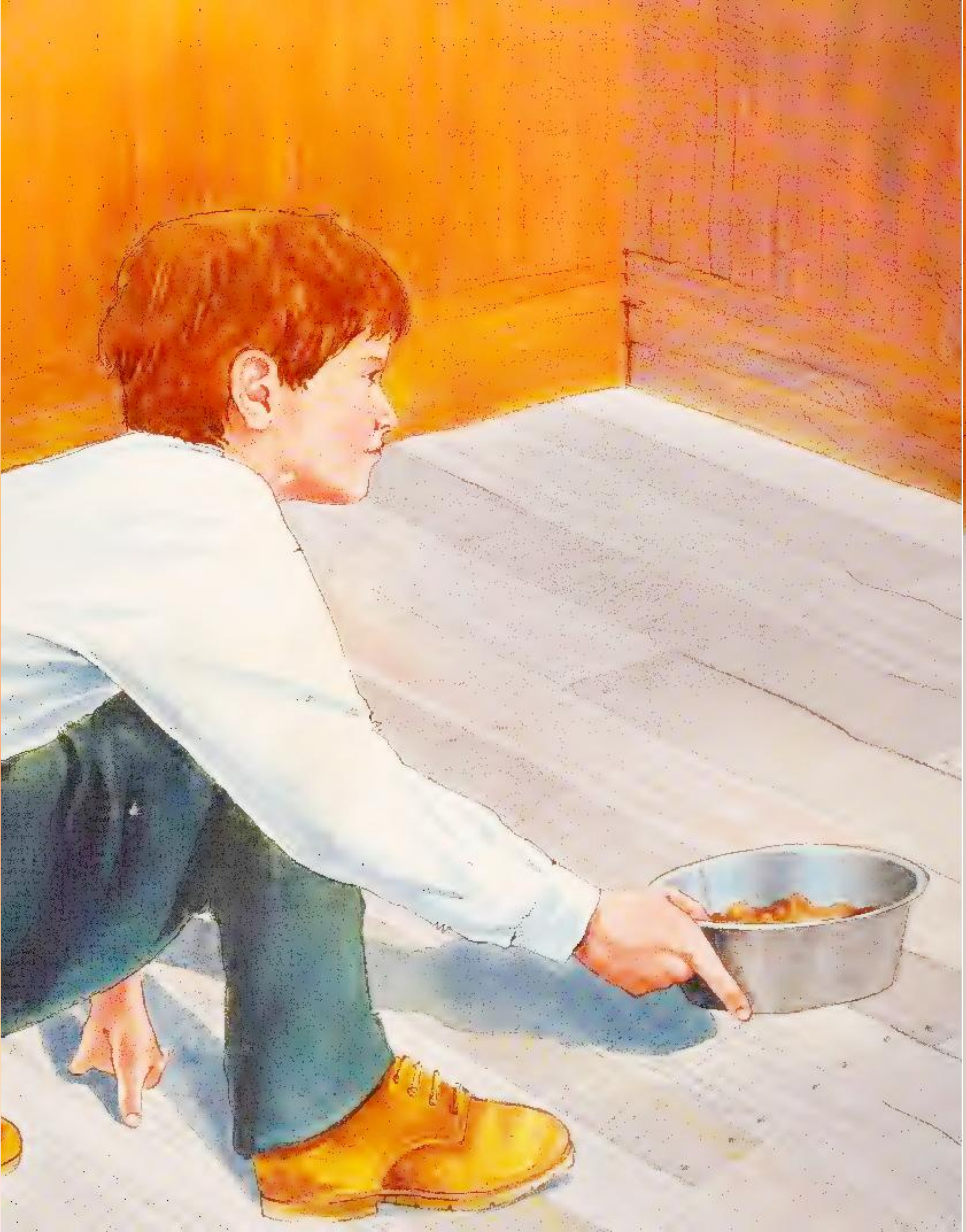

स्टीव मैकस्वीनी, जिनके पिता पैट एक सेक्शन फोरमैन थे, ने भी कुत्ते को देखा. शेप के आने के कुछ ही देर बाद, स्टीव और उसकी माँ किट्टी, डिपो पर गए. वहां उन्होंने शेप के लिए मांस के टुकड़े और पानी रखा. खाना रखने के बाद, वे छिप गए और देखने लगे कि कुत्ता उसका क्या करता है. पहले तो शेप ने बस खाने को सूंघा और उसे अकेला छोड़ दिया. लेकिन जल्द ही वो अपनी भूख पर काबू नहीं पा पाया और उसने भोजन खाना शुरू कर दिया.

लेकिन शेप के मालिक की जगह कोई और नहीं ले सकता था. जब स्टीव, किट्टी या स्टेशन के और किसी कर्मचारी कुत्ते को सहलाने की कोशिश करता तो शेप शरमाकर दूर हट जाता और अगली पैसेंजर ट्रेन आने तक गायब हो जाता. मैकस्वीनी ने हार नहीं मानी. वे खाना और पानी लाते रहे और छह-सात हफ़्तों बाद, शेप ने आखिरकार स्टीव और किट्टी को खुद को सहलाने दिया. टोनी शैंच ने शेप को फिर से डिपो की इमारत में सुलाने के लिए मनाने की कोशिश की, लेकिन कुत्ते ने उसकी बात नहीं मानी. उसे अभी भी प्लेटफ़ॉर्म के नीचे अपना कोना पसंद था.

हालाँकि, जैसे-जैसे सर्दी शुरू हुई और तापमान शून्य के करीब पहुँच गया. फिर शेप के लिए स्टेशन की गर्मी का विरोध करना मुश्किल होता गया. एक शाम, टोनी ने डिपो के अंदर मांस के कुछ टुकड़े रखे. फिर शेप सावधानी से अंदर गया. उसने ध्यान से अपने चारों ओर देखा और किसी खतरे के लिए हवा सूँघी. फिर, वह मांस के पास गया और उसे खा गया.

हालाँकि, जब उसके पीछे दरवाज़ा बंद हुआ, तो शेप घबरा गया. डर के मारे, वह डिपो में इधर-उधर दौड़ने लगा, और फ़र्नीचर उलट-पुलट करने लगा. साथ में वो बेचैनी से बाहर निकलने का रास्ता ढूँढ़ने लगा. टोनी उससे धीरे से बोला. आख़िरकार, कई मिनटों के बाद, शेप शांत हुआ. उसके बाद से, शेप अपनी रातें कम्बलों के आरामदायक बिस्तर पर बिताने लगा.

इस पूरे समय, टोनी और मैकस्वीनी परिवार को पता नहीं था कि शेप कहाँ से आया था और वह स्टेशन के आसपास क्यों घूमता रहता था. उन्हें उस कुत्ते का असली नाम भी नहीं पता था. हालाँकि तभी एड शील्ड्स नाम के एक कंडक्टर ने लोगों से उस कुत्ते के बारे में पूछताछ शुरू की.

एक दिन एड यात्रियों को ट्राम से उतरने में मदद करने के लिए नीचे उतरा और उसने पास के एक रेलकर्मी से पूछा कि क्या उसे कुत्ते के बारे में कुछ पता था.

"ओह," कर्मचारी ने जवाब दिया, "वह एक भेड़-पालक का कुत्ता था जिसकी मृत्यु हो गई थी. उन्होंने उसका शव ट्रेन से भेज दिया था और तब से वह कुत्ता यहीं घूम रहा है."

अगले दो सालों में, एड ने फ़ोर्ट बेंटन के शव-वाहकों और कई अन्य लोगों से शेप के बारे में पूछा. फिर उसने धीरे-धीरे उस कहानी को सुलझाया कि शेप, फ़ोर्ट बेंटन कैसे आया था और वो ट्रेनों में क्यों खोजता था. एड ने अपनी खोज की रिपोर्ट ग्रेट फॉल्स ट्रिब्यून अखबार को दी और अखबार ने उस अकेले चरवाहे कुत्ते के बारे में एक कहानी छापी. तब से, शेप की प्रसिद्धि बढ़ने लगी.

शेप की कहानी पूरे अमेरिका में फैल गई. देश भर के अखबारों ने उस वफ़ादार कुत्ते की दुर्दशा को छापा जो अपने मालिक का इंतज़ार करता रहा था. उसका नाम महासागर पार करके यूरोप और ऑस्ट्रेलिया तक पहुँच गया. पुरुषों, महिलाओं और बच्चों ने ग्रेट नॉर्दर्न रेलवे को सैकड़ों पत्र लिखे—इतने ज़्यादा कि कंपनी को उन सभी पत्रों को संभालने के लिए एक सेक्रेटरी नियुक्त करना पड़ा. लोगों ने शेप की देखभाल के लिए पैसे भेजे. इंग्लैंड की एक महिला ने शेप को एक हड्डी के आकार का केक भी भेजा.

लेकिन लोग सिर्फ़ पत्र ही नहीं लिख रहे थे. सैकड़ों लोग इस प्रसिद्ध चरवाहे कुत्ते की एक झलक पाने के लिए फ़ोर्ट बेंटन आने लगे. पचास से ज़्यादा भेड़पालकों ने शेप को एक नया घर देने की पेशकश की. कुछ लोग तो कुत्ते को अपने घर ले जाने के लिए खुद भी आए. टोनी शैंचे ने विनम्रता से इन प्रस्तावों को अस्वीकार कर दिया.

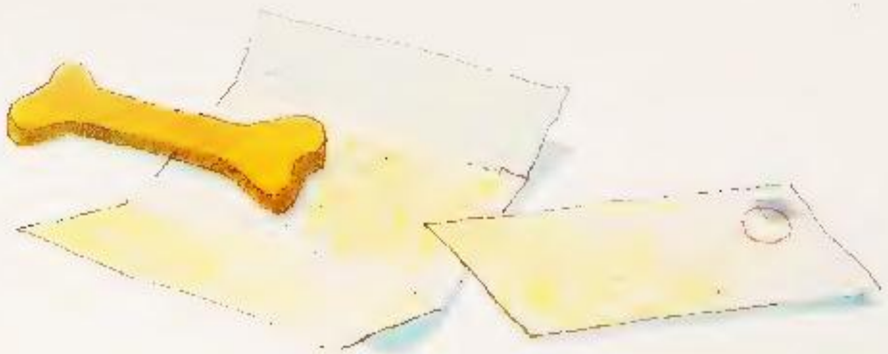

शेप को इस सबकी परवाह नहीं थी. कैमरे की क्लिकिंग से उसे डर लगता था. इसके अलावा, वह अपने मालिक का इंतज़ार करता रहा. शेप अब एक खुशहाल ज़िंदगी जी रहा था. उसका कंडक्टर दोस्त एड जब भी फ़ोर्ट बेंटन से गुज़रता, उसके लिए नाश्ता लाता, और टोनी शैंचे शेप के साथ राजसी व्यवहार करता था. टोनी को मिठाइयाँ बहुत पसंद थीं और वह अक्सर कुत्ते को एक फ्लेवर्ड कैंडी देता था. पैसेंजर ट्रेनों के बीच में, शेप टोनी के पैरों में वैसे ही लिपट जाता था जैसे वह कभी अपने मालिक के साथ लिपटा करता था.

7 दिसंबर, 1941 को, जापानी सेना ने पर्ल हार्बर स्थित अमेरिकी नौसैनिक अड्डे पर हमला किया. कुछ ही दिनों में, संयुक्त राज्य अमेरिका द्वितीय विश्व युद्ध में शामिल हो गया और सैनिकों के दस्ते फ़ोर्ट बेंटन से होकर गुज़रने लगे. इस समय तक, शेप बूढ़ा हो चुका था. वह अब फुर्तीला नहीं रहा था और उसकी सुनने की शक्ति भी कमज़ोर होने लगी थी.

जनवरी की एक ठंडी सुबह, शेप रेल की पटरियों पर एक हड्डी कुतरने के लिए निकला जो वहाँ फंसी हुई थी. जैसे ही वह हड्डी कुतर रहा था, पश्चिम की ओर जाने वाली 235 ट्रेन स्टेशन के पास पहुँची. इंजीनियर ने कुत्ते को पटरियों पर देखा और सीटी बजाई. शेप अपनी हड्डी चबाता रहा. इंजन की सीटी फिर दुबारा बजी, लेकिन शेप हिला तक नहीं. कुत्ते से कुछ ही गज की दूरी पर, इंजीनियर ने कसकर ब्रेक लगाए, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी.

स्टीव की माँ किट्टी पहाड़ी से नीचे उतरकर फोर्ट बेंटन स्कूल गईं और स्टीव को शेप की मौत की खबर दी. स्टीव और बाकी स्कूली बच्चे सदमे में थे. इस त्रासदी की खबर पूरे शहर और हर जगह फैल गई, लोग अपने प्यारे कुत्ते के जाने पर रो पड़े.

शेप के अंतिम संस्कार के लिए शहर के मेयर और ग्रेट नॉर्दर्न रेलवे ने आपस में काम बांट लिया. टोनी रात भर लकड़ी का ताबूत बनाने में लगा रहा.

शेप की मौत के दो दिन बाद, बुधवार दोपहर को, सैकड़ों लोग कारों और बसों में सवार होकर फोर्ट बेंटन डिपो के ऊपर एयरपोर्ट रोड के पास इकट्ठा हुए. जब चार बॉय स्काउट शेप को स्टेशन के सामने स्थित कब्रिस्तान तक ले जा रहे थे तब बर्फ़ गिर रही थी और सर्दियों का सूरज चमक रहा था.

शोक मनाने वालों ने अपनी आँखें पोंछीं और एक-दूसरे को गले लगाया. रेवरेंड राल्फ अंडरवुड ने सीनेटर जॉर्ज ग्राहम वेस्ट द्वारा रचित एक "स्तुति" पढ़ी:

इस स्वार्थी दुनिया में मनुष्य का एकमात्र निःस्वार्थ मित्र, जो उसे कभी नहीं छोड़ता, जो कभी कृतघ्न या विश्वासघाती साबित नहीं होता, वह उसका कुत्ता होता है...

जब प्रार्थना सभा समाप्त हुई, तो एक अकेले बॉय स्काउट ने अपना बिगुल उठाया और धीमी शोकपूर्ण धुन बजाई.

उपसंहार

समाचार माध्यमों ने शेप की मृत्यु की दुखद खबर पूरे देश और दुनिया भर में पहुँचा दी. हर जगह लोगों ने उस वफ़ादार चरवाहे कुत्ते को याद किया और उसके बारे में बातें कीं. लेकिन शेप की कहानी धुंधली नहीं हुई.

आने वाले वर्षों में, शेप के बारे में पत्रिकाओं - रीडर्स डाइजेस्ट, लेडीज़ सर्कल और फ़ार्म जर्नल में लेख प्रकाशित हुए. दूर-दूर से लोग फ़ोर्ट बेंटन में फूल चढ़ाने और अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने आते थे.

शेप की विरासत आज भी जीवित है. अगर आपको कभी फ़ोर्ट बेंटन जाने का मौका मिले तो, तो कुछ मिनट पहाड़ी पर गाड़ी चलाकर ट्रेन डिपो तक ज़रूर जाएँ. अब यात्री ट्रामें वहाँ से नहीं गुज़रतीं और पुराने डिपो को बहुत पहले ही तोड़कर एक छोटी, साधारण इमारत बना दी गई है. लेकिन अगर आप खड़े होकर पहाड़ी की ओर देखेंगे, तो आपको एक कंक्रीट का मकबरा और "शेप" नाम दिखाई देगा—उस अद्भुत कुत्ते की याद दिलाता है जिसने हमें वफ़ादारी और दिल से प्यार करने का मतलब सिखाया.

—शेप की कहानी सुनाते हुए —

शेप को मैंने पहली बार अपनी किताब "बी इज़ फॉर बिग स्काई कंट्री: ए मोंटाना अल्फाबेट" लिखते समय जाना. यह किताब मोंटाना के लोगों, जगहों, प्रकृति और इतिहास पर केंद्रित है. जब किताब प्रकाशित हुई, तो पाठकों ने मुझसे शेप के बारे में इतने सवाल पूछे कि मुझे लगा कि मुझे उनके बारे में एक और विस्तृत कहानी लिखनी चाहिए.

वर्षों से, शेप की कहानी सैकड़ों बार सुनाई गई है—हमेशा जोश के साथ, भले ही वो 100% सटीक न हो! तथ्य और कल्पना में अंतर करने के लिए, मैंने दर्जनों पत्रिकाओं और अखबारों के लेखों, पत्रों, तस्वीरों और पुस्तिकाओं का गहन अध्ययन किया. ये हेनरी आर्मस्ट्रांग, केनेथ रॉबिसन और डोना वाहलबर्ग द्वारा फोर्ट बेंटन स्थित रिवर एंड प्लेन्स संग्रहालय में उपलब्ध कराई गई थीं.

मुझे तीन ऐसे लोगों का साक्षात्कार करने का सौभाग्य भी मिला जो शेप को प्रत्यक्ष रूप से जानते थे: स्टीव मैकस्वीनी; जॉन, या "जैक", लेप्ली, जो शेप के अंतिम संस्कार में पार्थिव शरीर को ले जाने वाले थे और शेप पर एक बेहतरीन पुस्तिका के लेखक थे; और टोनी शैंचे की बेटी, आइरीन बोकर. शेप के जीवन के बारे में मुझे जानकारी और दृष्टिकोण प्रदान करने के लिए मैं इन लोगों का बहुत आभारी हूँ.

अंत में, मैं शेप की दुनिया को स्वयं देखने और अनुभव करने के लिए फोर्ट बेंटन गया. इस शोध से मैंने उपलब्ध संसाधनों और शेप के निधन के बाद से बीते कई वर्षों को देखते हुए यथासंभव ईमानदार विवरण तैयार करने का प्रयास किया. मेरी कलात्मक स्वतंत्रता केवल शेप के अज्ञात प्रारंभिक वर्षों में ही काम आई, जो उसके स्वामी की मृत्यु से पहले का काल था. यहाँ, मुझे यह पुनर्निर्माण करने के लिए मजबूर होना पड़ा कि 1920 और 30 के दशक में मोंटाना में एक भेड़पालक और चरवाहे कुत्ते का जीवन कैसा रहा होगा. मुझे यकीन है कि मेरी कहानी सभी को संतुष्ट नहीं करेगी और उन सभी लोगों से मैं क्षमा चाहता हूँ, लेकिन कृपया इतना जान लें कि मैंने शेप और उसके जीवन के प्रति सच्चे रहने की पूरी कोशिश की है.

वैसे, शेप के बारे में एक आम सवाल यह है कि "उसके स्वामी की मृत्यु किस बीमारी से हुई?" कोई भी निश्चित रूप से नहीं जानता, लेकिन मैंने जो विवरण पढ़े हैं, उनसे ऐसा लगता है कि वह व्यक्ति तपेदिक (ट्यूबरक्लोसिस) से मरा होगा, जो उस समय एक आम जानलेवा बीमारी थी.

एक और भी बड़ा रहस्य यह है कि "शेप का स्वामी कौन था?" उल्लेखनीय रूप से, उसकी पहचान अभी भी हमें नहीं मिल पाई है. 1936 की गर्मियों में कई भेड़पालकों की मृत्यु हो गई, लेकिन कोई भी यह निश्चित रूप से नहीं बता पाया कि शेप का स्वामी कौन था. शायद इस पुस्तक के पाठकों में से कोई एक इसका उत्तर नए सिरे से खोजने के लिए प्रेरित होगा.

पाठकों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि उनकी मृत्यु के पचास से भी अधिक वर्षों बाद, "शेप" मोंटाना और पूरे पश्चिम में एक प्रिय पात्र बना हुआ है. 26 जून 1994 को, फोर्ट बेंटन के नगर प्रमुखों ने अपने प्रसिद्ध कुत्ते के सम्मान में एक नई कांस्य प्रतिमा का अनावरण किया. आज, यदि आप फोर्ट बेंटन शहर में जाएँ, तो आप सैकड़ों शुभचिंतकों के संदेशों वाली ईंटों से घिरे सुंदर कांस्य स्मारक को देख सकते हैं.